कक्षा में रोल प्ले के माध्यम से सीखना

आशा सिंह

कलाओं की प्रकृति कुछ ऐसी होती है कि इन पर आधारित सामूहिक गतिविधियों में बच्चे ज़्यादा रुचि लेते हैं। इनमें सभी बच्चे भागीदारी कर सकते हैं। कला गतिविधियों के उपयोग से बच्चों को कठिन अवधारणाएँ सरलता से समझाने में मदद मिलती है। यह लेख शिक्षक द्वारा योजना बनाकर रोल प्ले और रचनात्मक नाटक कला के माध्यम से किए गए कुछ ऐसे ही प्रयासों के उदाहरण प्रस्तुत करता है।

एक कक्षा में बच्चे इस अवधारणा से जूझ रहे थे कि पृथ्वी की गति से दिन और रात कैसे बनते हैं। घूर्णन और परिक्रमण की दोहरी गति की वजह से बच्चों को यह बात समझने में मुश्किल हो रही थी। इसलिए शिक्षिका ने कहा, ''चलो, एक खेल खेलते हैं।'' उन्होंने तीन बच्चों को सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी की भूमिकाएँ दीं। सूर्य स्थिर होने के कारण एक स्थान पर खड़ा था। जो बच्चा पृथ्वी बना था। वह अपनी जगह पर घुमा और साथ ही उस बच्चे का भी गोलाकर में चक्कर लगाया और साथ ही उस बच्चे का भी चक्कर लगाया जो सूर्य बना हुआ था। तुरन्त एक बच्चे ने बेहद उत्साह के साथ बताया, ''जब वह पृथ्वी बना बच्चा एक स्थान पर घूम रहा होता है तो दिन और रात बनते हैं, और जब वह सूर्य के चारों ओर एक चक्कर पूरा करता है तो एक पूरा वर्ष होता है।'' सभी बच्चे ख़ुशी से ताली बजाने लगे क्योंकि उन्होंने बड़ी आसानी से इस घटना को समझ लिया था।

इस तरह के खेल खेलने के अनुभवों से बच्चों के मन में भावनात्मक सुरक्षा आती है जिसके चलते वह अपनी कठिनाइयों को दूसरों से साझा करने के लिए सहज रहते हैं। बच्चों को ऐसे समूह में शामिल होकर सीखने में सन्तोष व ख़ुशी मिलती है जिसमें किसी समस्या का हल मिल-जुलकर खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भावनात्मक सुकून व्यक्ति को मुश्किल चीज़ों को समझने और उनके हल खोजने के लिए और अधिक प्रेरित करता है।

चित्र 1: रोल प्ले के दौरान साथियों को उनकी भूमिकाओं के बारे में बताता एक विद्यार्थी

> **बच्चों द्वारा समूह में निर्णय लेना उनके लिए प्रभावशाली सीख बन जाती है। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।**

रचनात्मक नाटक पाठों के लाभ

हमारे देश में हुए कई अध्ययनों ने बताया है कि कला के माध्यम से सिखाए जाने के उत्साहवर्धक परिणाम मिले हैं। इससे बच्चों में सीखने की जिज्ञासा बढ़ जाती है और वे मज़े से सीखते हैं। विशेष योग्यता वाले बच्चों के साथ किए गए एक अध्ययन में बताया गया है कि संगीत और गति का प्रयोग करने से इन बच्चों में शारीरिक अंगों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और दिशाओं की समझ बनाने में मदद मिलती है। इनके इस्तेमाल से नियमित बातचीत में शारीरिक दूरी के लिए सामाजिक मानदण्डों को भी बेहतर बनाने के अच्छे परिणाम मिले हैं। ऐसी ही एक विधा नाटक है। नाटक बहुत आसानी से पारिवारिक सम्बन्धों और रिश्तों को जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब बच्चे पाठ्यपुस्तक पर आधारित पाठों के उत्तर देने की चिन्ता किए बिना सरल कामों को पूरा करके सीखते हैं तब वह अधिक आत्मविश्वासी बनते हैं। इससे सीखने और कक्षा की गतिविधियों में शामिल होने की उनकी इच्छा व उत्सुकता बढ़ती है।

नाटक का उपयोग दृष्टिबाधित बच्चों को स्थान की अवधारणा समझाने के लिए भी किया गया है। जिन बच्चों में सामाजिक कौशल की कमी होती है उनके लिए ये नाटक विभिन्न स्थितियों में सामाजिक व्यवहार पर विचार करने में मदद करते हैं। इसके लिए बच्चों को नाटक का दृश्य दिखाकर उस पर आपस में चर्चा करने को कहा जाता है। उदाहरण के लिए, चौथी कक्षा में बच्चों को एक ऐसा दृश्य दिखाया गया जिसमें एक बच्चा डबलरोटी का पैकेट ख़रीदने के लिए दूसरे कामों में व्यस्त दुकानदार का हाथ खींच रहा है। सभी बच्चे इस हास्यपूर्ण दृश्य को देखकर हँस पड़े क्योंकि उन्होंने इस तरीक़े से किसी बच्चे को दुकानदार का ध्यान खींचकर सामान ख़रीदते नहीं देखा था। इस पर हुई चर्चा में बच्चे अपनी राय देने लगे और सबने मिलकर निष्कर्ष निकाला कि ''हम उन लोगों के साथ निकटता का व्यवहार नहीं करते हैं जिनसे हमारी अच्छी जान-पहचान न हो।''

इस प्रक्रिया के बहुत अधिक सहयोगी होने से बच्चों में त्वरित सोच, समस्या-समाधान और एकाग्रता जैसे गुण विकसित होते हैं। इसके साथ ही, यह प्रक्रिया बच्चों में सोचने, विचारने और विश्लेषण करने के कौशल विकसित करती है। विद्यार्थियों के साथ नाटक तैयार करने से अवधारणा-निर्माण, सहयोग और प्रतिबद्धता के गुणों में वृद्धि होती है। यह सभी कौशल जीवन के लिए ज़रूरी हैं।

इम्प्रोवाइज़ेशन की तकनीकें बच्चों के दिमाग़ को जीवन्त बनाती हैं

कक्षा में मिल-जुलकर लिखी गई कहानी को पाठ्यपुस्तक के किसी भी पाठ या बच्चों की रुचि वाले किसी विषय से जोड़ा जा सकता है। जैसे-जैसे विद्यार्थी लिखते हैं, वैसे-वैसे वह नाटक में आने वाले चरित्रों को गढ़ते जाते हैं। इस दौरान वह नाटक के परिदृश्य (सेटिंग), कथानक और समाधान के बारे में सोचते हैं। बातचीत के द्वारा कहानी लिखने की प्रक्रिया विद्यार्थियों को ज़्यादा आसान, ज़्यादा मज़ेदार और ज़्यादा दिलचस्प लगती है। बनिस्बत इसके कि विद्यार्थियों को काग़ज़ पर कहानी लिखने को कहा जाए और वह यह सुनिश्चित करें कि उसमें कहानी के सभी तत्त्व शामिल हों। काग़ज़ और पेंसिल से काम करना उन विद्यार्थियों के लिए ज़रा मुश्किल होता है जिन्हें भाषा और लेखन में कठिनाई होती है। हालाँकि, जब एक बार कहानी बन जाती है तब बच्चे अभिनय करने से पहले इसे ख़ुद ही लिख लेना चाहते हैं। आमतौर पर बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने विचारों को काग़ज़ पर लिखना चाहते है, इसे प्रोत्साहित करना चाहिए, इससे उनमें लिखने-पढ़ने के कौशल का विकास होता है।

> **जब बच्चे पाठ्यपुस्तक पर आधारित पाठों के उत्तर देने की चिन्ता किए बिना सरल कामों को पूरा करके सीखते हैं तब वह अधिक आत्मविश्वासी बनते हैं।**

इम्प्रोवाइज़ेशन एक ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जो बच्चों के दिमाग़ को सक्रिय करती है क्योंकि इसके लिए गहन सोच की आवश्यकता होती है जिससे बच्चों के दिमाग़ को चुनौती मिलती है। इस तरह के अभ्यास, पाठ को समझने, थीम की पहचान करने और भाषा को प्रभावी बनाने के लिए उपयोगी होते हैं।

जब किसी स्थिति को बच्चों के सामने प्रस्तुत किया जाता है तो वह उसके अर्थ को समझ लेते हैं, उसे अपने अनुभवों से जोड़ लेते हैं और उसे अपनी आज की वास्तविकता में समायोजित कर लेते हैं। हालाँकि, एक टीम का हिस्सा होने के नाते, वह मिल-जुलकर कार्य करने के लिए सहयोग करते हैं। इस सामूहिक प्रयास में, उनकी प्रस्तुति की गुणवत्ता, सहयोग की सीमा पर निर्भर करती है। सभी बच्चों की भागीदारी की ख़ातिर प्रयास करने के लिए तरह-तरह के सन्दर्भों और विषयों को खोजने की आवश्यकता होगी जो हर प्रकार के बच्चों को आकर्षित करें तथा विविध वास्तविकताओं पर आधारित हों।

तालिका 1: इम्प्रोवाइज़ेशन के लिए सुझाव के रूप में कुछ प्रस्तावित थीम

विषयवस्तु	उदाहरण
अकादमिक	कक्षा में अन्तःक्रिया, भाषाओं की विविधता, अभिभावक-शिक्षक सम्बन्ध
परिस्थिति-आधारित	रेलवे स्टेशन, बाज़ार, मेला आदि के दृश्यों का चित्रण
रिश्ते पर आधारित	शिशु के साथ एक दम्पति, स्कूल जाने वाले बच्चों का परिवार, किशोर बच्चों वाला परिवार
चरित्र पर आधारित	विशेष शिक्षक, जादूगर, भूत, भिखारी, आदि
कहानियाँ	6-7 के समूह में, बच्चे कहानियाँ साझा करते हैं। इनमें से अभिनय के लिए कोई एक कहानी चुनते हैं। वह कहानी के पात्रों की भूमिका निभाते हैं। इससे उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक और पौराणिक पात्रों से जुड़ने का अवसर मिलता है।
व्यक्तिगत अनुभव	बच्चे समूह में अपनी उन यादों पर चर्चा करते हैं जो उन्हें सबसे महत्त्वपूर्ण लगती हैं। इनमें से एक याद को इम्प्रोवाइज़ेशन के लिए चुनते हैं। इस तरह के व्यक्तिगत क़िस्से साझा करने से समूह को एक दूसरे के सामाजिक-भावनात्मक सन्दर्भों से परिचित होने का अवसर मिलता है।
रंगमंच की सामग्री का उपयोग	बच्चों को छड़ी, बोतल, थैला और किताब जैसी कुछ रंगमंच की सामग्री दी जा सकती है। इस सामग्री से उन्हें एक कहानी का अभिनय करने को कहा जाता है। इससे बच्चे अपनी कल्पना को ख़ुद की सामाजिक और भौतिक दुनिया से जोड़ पाते हैं।

केस स्टडी

मैं एक केस स्टडी का उपयोग यह दिखाने के लिए कर रही हूँ कि नियमित कक्षाओं में कला गतिविधियों का उपयोग करने से कक्षा में कोई रुकावट नहीं आती और न ही ज़्यादा समय लगता है। दिल्ली निवासी, बाल विकास विषय के एक स्नातकोत्तर विद्यार्थी ने कक्षा तीन के हिन्दी पाठ्यक्रम से एक पाठ को अभिनय के ज़रिए पढ़ाने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप बच्चों द्वारा पाठ को याद रखने के तरीक़े में गुणात्मक अन्तर नज़र आया। यह बात उनके उत्तरों और प्रदर्शन से पता चली। यही नहीं, पारम्परिक चॉक-एंड-टॉक शिक्षण विधि की तुलना में नाटक गतिविधियों में शामिल होने वाले बच्चों को कुछ अधिक अंक भी मिले।

तरीक़े और प्रक्रियाएँ

पहला दिन

किसी मनोरंजक और दिलचस्प चीज़ से शुरुआत करना सबसे अच्छा होता है। नए सत्र की शुरुआत में, शिक्षक ने बच्चों से परिचित होने के लिए नाम के खेल से शुरुआत की। इससे आपसी तालमेल बनाने और बच्चों को अपनी झिझक मिटाने में भी मदद मिलती है।

इस खेल में बच्चे एक घेरे में खड़े हो गए और सबने एक-एक कर किसी एक मनोभाव के साथ अपना नाम पुकारा। उदाहरण के लिए, पवना ने अपने हाथ ऊपर उठाए और उछलकर तेज़ आवाज़ में कहा, ''पवना!'' शिक्षक पीछे हट गए और बोले, "हे भगवान, पवना!''

सभी बच्चे ऐसा करने में सहज नहीं होंगे। मौक़े पर देखने, जल्दी से सोचने और तत्काल फ़ीडबैक देने से कक्षा में उत्साह बढ़ेगा। इसके बाद शिक्षक ने विद्यार्थियों से यह सोचने के लिए कहा कि वह अपने रिश्तेदारों के घर कैसे जाते हैं और वह फिर इसे करके दिखाएँ। कक्षा में तो जैसे भगदड़ मच गई। कुछ ने दोपहिया वाहन चलाए तो कुछ ने कार चलाने या ऑटो-रिक्शा में बैठने का नाटक किया। उत्साहित विद्यार्थी एक दूसरे से टकराए और हंगामा करने लगे। हमें इस अव्यवस्था को ठीक करने के तरीक़े खोजने होंगे। जैसे– गेंद को ड्रिबल करना या हाथ ऊपर करके 'तारे-तारे' जैसा मंत्रोच्चार करना। यह आज़माया हुआ तरीक़ा है, और कक्षा में अनुशासन के लिए जादू जैसा काम करता है।

पहले सत्र को समाप्त करने के लिए शिक्षक ने बच्चों से पाठ्यपुस्तक का एक विशेष पृष्ठ खोलने के लिए कहा। शिक्षक ने पंक्तियों के अनुसार पाठ के भाग निर्धारित किए (एक या दो पंक्तियाँ, आप पाठ को कैसे विभाजित करते हैं, यह इस पर निर्भर करता है)। उस पाठ में यातायात / ट्रैफ़िक, महत्त्वपूर्ण स्थानों और शहर में नए विकास के बारे में बताया गया था। बच्चों को नीचे दिए गए विषयों के आधार पर समूहों में बाँटा गया और उनसे सम्बन्धित भाग को पढ़ने को कहा गया। फिर पढ़े हुए को चित्र, नाटक या अन्य क्रियाओं के माध्यम से कहानी के रूप में बताने के लिए कहा गया।

- यातायात / ट्रैफ़िक
- ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल; और
- शहर में विकास

दूसरा दिन

बच्चों को उनके समूहों में बैठाया गया और उनसे कहा गया कि उन्हें पाठ का जो भाग दिया गया है उसके बारे में अपनी समझ को व्यक्त करने के लिए अभिनय की योजना बनाएँ। शिक्षक ने चारों ओर घूमकर चर्चा की, विषयवस्तु को कहानी के रूप में कैसे व्यक्त किया जाए और प्रत्येक समूह से संवाद लिखने के लिए कहा।

'यातायात समूह' ने फ़्लाईओवर वाली सड़कें बनाईं, और इन्हें 'महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल समूह' के विचारों से जोड़ा। जल्द ही तीनों टीमों को एहसास हुआ कि पाठ के विभिन्न भागों को जोड़ने के लिए पूरी कक्षा को सहयोग करना होगा। जब चित्रों में जगह की कमी महसूस हुई तो उन्हें इम्प्रोवाइज़ेशन वाली तकनीक का उपयोग करके चिड़ियाघर या बाज़ार जैसे स्थानों के बारे में बताने के लिए कहा गया।

कुछ बच्चों ने संवाद लिखे; यह ज़रूरी नहीं था कि वह पूरी तरह से पाठ से सम्बन्धित संवाद ही लिखें, बल्कि उन्हें जो समझ में आया उसका ध्यान रखना था। कुछ समूहों ने इस विषय पर काम किया कि सेट डिज़ाइन और फ़्लाईओवर या ट्रैफ़िक लाइट आदि को कैसे सुधारा जाए। बच्चों ने अपनी तरह-तरह की प्रतिभाओं का इस्तेमाल किया और वह बेहद ख़ुश हुए।

चित्र 2 : रोल प्ले के दौरान सीखना भी और मज़ेदारी भी

चित्र 3 : एक दूसरे से सीखते हुए ख़ुश होते विद्यार्थी

चित्र 4 : संवाद अदायगी के दौरान अपने सीखे हुए की साझेदारी

तीसरा दिन

बच्चे प्रस्तुति का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे थे और अपनी बारी के अनुसार अभिनय करने के लिए रंगमंच की सामग्री के साथ तैयार थे। अभिनय करते समय भी उन्होंने पाठ के वाक्यों को याद किया और तथ्यों के बारे में एक दूसरे को ठीक किया। इस तरह बच्चों पर पाठ याद करने का दबाव भी नहीं पड़ा और पाठ का दोहराव भी हो गया।

वास्तविक अभिनय 15 मिनट से अधिक समय का नहीं था, लेकिन उत्साह, बहस और चर्चा से बच्चे बहुत ज़्यादा रोमांचित थे। पाठ में उनका उत्साह और रुचि बनी रही। जैसे ही मंचन समाप्त हुआ, शिक्षक ने उन्हें बताया कि एक छोटी-सी प्रश्नोत्तरी होगी ('टेस्ट' शब्द का उपयोग नहीं किया)। इसका उद्देश्य इस बात का आकलन करना और जानना था कि बच्चों ने पाठ को कितना समझा और याद रखा है।

परिणाम और निष्कर्ष

दो सप्ताह बाद बच्चों की विषयवस्तु की समझ को जाँचा गया। उनके उत्तरों से किसी ख़ास जानकारी को याद रखने के एक विशेष गुण का पता चला। उदाहरण के लिए, 'मन्दिर कमल के आकार का था' न कि यह कहना कि 'मन्दिर फूल के आकार का था' (सामान्य 'फूल' के स्थान पर 'कमल' का प्रयोग करना)। बाद वाला उत्तर तब मिलता है जब बच्चे मुख्य रूप से केवल सुनते हैं। लेकिन जब वह भाग लेते हैं और गतिविधि करते हैं तो उन्हें पाठ के विशेष पहलू याद रहते हैं।

> **खेल खेलने के अनुभवों से बच्चों के मन में भावनात्मक सुरक्षा आती है जिसके चलते वह अपनी कठिनाइयों को दूसरों से साझा करने के लिए सहज रहते हैं।**

थोड़ा हँसना या सक्रिय भागीदारी कक्षाओं में रुचि पैदा करती है। बच्चों में तथ्यों को गहराई से जानने की ऊर्जा और इच्छा होती है। उनमें लगातार सीखने और टीम में काम करने की लालसा होती है। बच्चे सामाजिक क्षमता विकसित करते हैं। वह अपने आस-पास के माहौल को देखने का रचनात्मक तरीक़ा ईजाद कर लेते हैं और उनमें सकारात्मकता की भावना का विकास होता है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

आशा सिंह अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ़ एजुकेशन की विज़िटिंग फ़ैकल्टी की सदस्य हैं। वह प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षण की विशेषज्ञ हैं। वह बच्चों के बारे में पढ़ाती रही हैं और उनके साथ काम भी करती रही हैं। उनकी रुचि शिक्षकों के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कला का उपयोग करने और पाठ्यक्रम विकसित करने में रही है।

सम्पर्क : asha.singh@apu.edu.in